मुल्य रु। ५-००

सलंग अंक ७२ एप्रिल-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

श्री नरनारायणदेव का १११ वाँ पाटोत्सव तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद,
श्री नरनारायणदेव का १९१ वें पाटोत्सवकी झलक

श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव पर श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज में श्री घनश्याम महाराज को किंशुक के पुष्प से सजाकर दर्शन - छायाचित्र : प.पू. बड़े महाराजश्री ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ ● अंक : ७२

एप्रिल-२०१३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	व्रत राज एकादशी	०८
०४.	गोपालानंद स्वामी की स्कूल	११
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०६.	सत्संग बालवाटिका	१६
०७.	भक्ति सुधा	२३
०८.	सत्संग समाचार	२६

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

वसंतऋतु तथा पतझड़का समय आ गया है । अब वृक्षों के ऊपर नई कोपल निकलेगी । वृक्ष नये रुप धारण करेंगे । नींम तथा आम में नये बौर आयेंगे । चैत्र शुक्ल-१ से चैत्र शुक्ल-९ तक भगवान को नीम के रस का भोग लगाया जायेगा । भगवान तो निर्दोष है, फिर भी हम सभी के उपदेश के लिये यह कार्य किया जाता है । नीम के रस का प्रसाद लगातार नव दिन तक पीया जाय तो सम्पूर्ण वर्ष तक शरीर निरोगी रहता है । इसलिये प्रत्येक हरिभक्त भगवान के प्रसाद वाला नीम का रस अवश्य पीवें ।

विद्यार्थी के परीक्षा का समय चल रहा है । कक्षा-१०-१२ के बोर्ड की परीक्षा पुरी हो गयी । जो पूरे वर्ष तक परिश्रम किये होंगे उन्हें चिन्ता नहीं होगी, परंतु जो टी.वी. फिल्म इत्यादि देखने में समय बिगाडे होंगे उन्हें परिणाम की चिंता अवश्य होगी । इसलिये विद्यार्थी मित्रों ! आपके मा-बाप आपके उज्ज्वल भविष्य के लिये आपकी प्रगति के लिये जो भी परिश्रम करते है वह इतना तक ही नहीं रहता बल्कि इसके साथ रात-दिन परिश्रम करके ऊंची फीस भरकर अच्छा शिक्षण दिलाते हैं । इसके बाद भी आप उनका मूल्य नहीं समजे तो पूरी जिन्दगी पछताना पडेगा । यदि उनकी उपेक्षा करेंगे तो आपका जीवन अंधकार मय हो जायेगा ।

वर्तमान समय में जितनी उच्च शिक्षा आपकी होगी उतनी ही उच्च शिक्षा आप अपने आनेवाली पीढी को दे सकेगें, इसमें कोई दोराय नहीं है । विश्व में जिन देशों ने प्रगति की है उसका एकमात्र कारण यह है कि वहाँ की १००% प्रतिशत शिक्षा है । इसलिये हमें भी (प्रत्येक व्यक्ति को) शिक्षण में ध्यान देना चाहिये । ऐसा होने पर आप कुटुंब, समाज तथा देश के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे ।

अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का प्रागट्य दिन चैत्र शुक्ल-९ तथा भगवान श्री राम की राम नवमी को अमदाबाद मंदिर में भव्य उत्सव मनाया जायेगा । श्रीजी महाराज की आज्ञा है कि ऐसे उत्सव में आप जितने भी दूर रहते हैं लेकिन नजदीक के मंदिर में अवश्य दर्शन करने पधारियेगा ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१३)

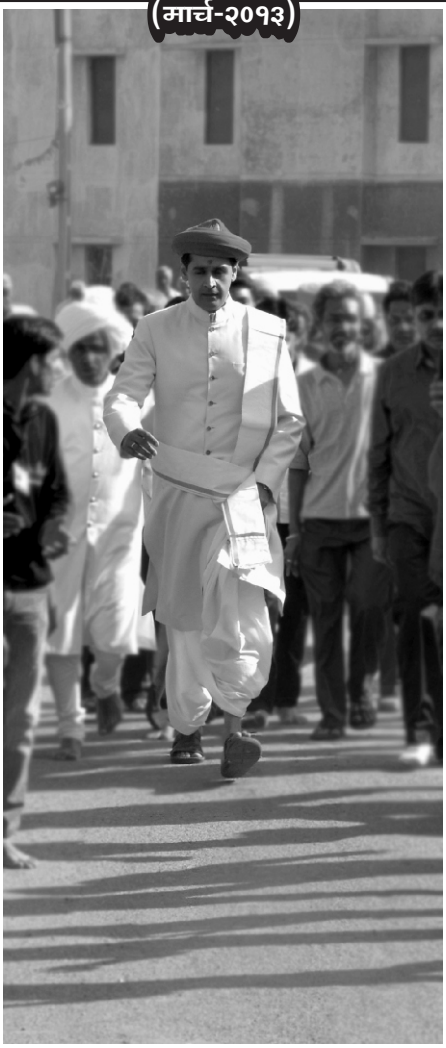

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर भाडपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५-६. आदोई (कच्छ) पदार्पण।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोटा (इडर देश) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१२-१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण।

१४. परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९१ वाँ पाटोत्सव महाभिषेक अपने वरद हाथों से धूमधाम से सम्पन्न किये।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर लखतर (मूलीदेश) पदार्पण।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८. राणीप तथा निर्णयनगर हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण.

१९ से २५. तक ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) श्री स्वामिनारायण मंदिर के ५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५-२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद मंदिर में फूलदोलोत्सव अपने वरद् हाथों से किये।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा देवलिया मूर्तिप्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) पदार्पण।

३०. रात में बलदिया (कच्छ) पदार्पण।

३१. नारायणपर (कच्छ) प.भ. कुंवरजी देवराज के यहाँ वास्तु प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१३)

१४. श्री नरनारायणदेव का १९१ वाँ पाटोत्सव महाभिषेक अपने वरद् हाथों से सम्पन्न किये।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

व्रत राज एकादशी

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने आश्रितजनों के लिये एकादशी व्रत करने की आज्ञा की है। इसका प्रमाण शिक्षापत्री श्लोक ७९ में दिया गया है। एकादशी व्रत को आदरपूर्वक करना चाहिये, इस दिन बड़ा उत्सव करना चाहिये।

एकादशी के उत्पत्ति की कथा पुराणों मे वर्णित है। इस प्रसंग का उल्लेख श्रीजी महाराजने वचनामृत ग.म. ८ में किया है। मुर दानव की कथा से मिलता है। मुरदानव को मारने के लिये सभी देवता जब समर्थ नहीं हो पाये तो स्वयं प्रभु उससे युद्ध किये और थक कर सोगये। उधर भगवान का पीछा करते हुये मुर आ रहा था, भगवानने अपनी आंख से एकादशी को उत्पन्न किया। एकादशी के साथ मुरदानव का युद्ध हुआ जिस में मुरदानव मारा गया। चौदह लोक में एकादशी की जय जयकार हुई। सभी देवता एकादशी की पूजा-स्तुति किये। भगवानने वरदान दिया कि एकादशी हमारे भक्तों की रक्षा करेगी। एकादशी तिथी को व्रत इत्यादि के माध्यम से उसे एकादशी तिथी में स्थान दिया। जो एकादशी तिथि के दिन व्रत रखेगा वह आसुरी तत्वों से रक्षित होकर हमारे धाम को प्राप्त करेंगे। हमारी दश इन्द्रिया तथा इग्यारहवे मन से एकादशी तिथी की उत्पत्ति हुई है। इस तरह एकादशी तिथि को व्रत करने वाले जो भी होंगे उन्हे एकादश इन्द्रियों पर संयम रहेगा। वे केवल प्रभु के साथ सम्बन्धरखेंगे तो जीवन में सुख और शान्ति की प्राप्ति होगी।

एकादशी की उत्पत्ति कार्तिक कृष्ण-११ को हुई थी। इसीलिये उसका नाम एकादशी रखा गया। वर्ष में आनेवाली उत्पन्ना एकादशी से प्रबोधनी एकादशी तक की सभी विधिबताई गई है। प्रत्येक एकादशी का प्रभाव भिन्न-भिन्न है। फिर भी परब्रह्म को प्राप्त करने का सद्‌गुण सभी एकादशियों में है। मात्र मास तथा पक्ष भेद से नाम भेद है। शुक्ल पक्ष की एकादशी को उत्तम माना गया है। इसका कारण चन्द्रबल है। इसका प्रमाण निर्णय सिन्धु में मिलता। लेकिन भक्तों को दोनो पक्ष की एकादशी करनी चाहिए। (एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि) एकादशी का व्रत नियम-आदर के साथ करना चाहिये। अधिक मास में आने वाली दो एकादशी इन्हीं २४ एकादशियों में सम्मिलित समझना चाहिये।

सकाम व्रत करने वालों में से कितने निमित्त - हेतु से व्रत करते है। उनके लिये उत्पन्ना एकादशी से लेकर देव प्रबोधनी एकादशी तक २४ एकादशी के व्रत का विधान है। किसी तरह व्रत के समय बिड्न आवे तो छोडना नहीं चाहिये। भगवान के भक्त व्रत का भंग किसी भी अवस्था में न करें. आठ वर्ष से ८० वर्ष तक सभी को व्रत करना चाहिये। बालक, रोगी, वृद्ध को छोड़कर सभी के लिये नियम है। समर्थ हों तो यावज्जीवन करें। एकादशी की महिमा व्रत विधिमें कही गयी है। नैमिषारण्य में सुतपुराणी शौनकादिक ऋषियों को एकादशी व्रत के नियम का निरुपण किया था जिस में एक वर्ष लगा था। फिर भी एकादशी के विषय में निर्णय सिन्धु तथा धर्मसिन्धु में विस्तार पूर्वक वर्णन है।

व्रत के विष यमें शैव तथा वैष्णवो का मत में भेद है। शैव मत सूर्यास्त तिथि को मानते है तथा वैष्णव लोग उदया तिथि को मानते हैं। इसलिये हमलोग द्वादशीवेधा एकादशी का व्रत करते है। धर्मसिन्धु के मतानुसार जो दिक्षित हो वे सूर्योदय तिथि तथा जो अदिक्षित हों वे सूर्यास्त तिथि के अनुसार व्रत को माने। दशमीं तिथि को सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करना चाहिये। द्वादशी के दिन त्रयोदशी लगने से पूर्व पारणा करलेनी चाहिये। एकादशी के दिन विशेष ध्यान देने योग्य - अन्न नहीं लेना चाहिये, जिस में- अनाज, बाजरी, गेहूँ, चावल

सर्वधान्य, तिल, मसूरदाल, शाग, दूसरे के भोजन को अज्ञानता में भी नहीं खाना चाहिये । एकादशी के दिन उपवास करना चाहिये । वारंवार जल भी नहीं पीना चाहिये । परंतु मध्यमव्रत वालो में वृद्ध - रोगी, अशक्तों के लिये फल, तिल, पंचामृत, कंदमूल, दूध, जल खाने पीने के लिये छूट की गयी है । परंपरा में उत्पन्न होने वाले प्राकृतिक - मोरैया, राजगरा, सींघाडा इत्यादि का फलाहार का समावेश होता है । पान, तम्बाकू, मुखवास इत्यादि का व्रत में सेवन नहीं करना चाहिये ।

प्रातः काष्ट की दातुन नहीं करना चाहिये । मात्र नमक से कुल्ला करना चाहिये । दिन में शयन नहीं करना चाहिये । ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिये । क्रोधनहीं करना चाहिये । दिन में सोने से तथा मैथुन करने से तत्काल व्रत भंग हो जाता है । रोने से तथा झगडा करने से भी व्रत भंग होता है । मन-वाणी से भी हिंसा व्रत में नही करनी चाहिये । अनाज दूसरे के लिये भी नहीं बनाना चाहिये । उसकी सुगन्धनही लेनी चाहिये । भोजन की वात भी नहीं करना चाहिये । क्योकि भोजन की वात करने से जिह्वा का स्मरण होता है । पुष्पों की सुगन्धभी नहीं लेनी चाहिये । दाढी-मुंडन भी नहीं करना चाहिये । एकादशी व्रत का फल उनके १५ पीढी के पूर्वजो को मिलता है, इससे उन्हें तत्काल मुक्ति होती है । जीवित या मृत कोई व्यक्ति कठिन प्रायश्चित भोगता हो और कोई एक वर्ष के एकादशी व्रत का फल संकल्प करके अर्पित करें तो उसी समय उस कर्म फल भोगने से उसकी मुक्ति हो जायेगी । रात्रि जागरण तथा रात्रि भजन या रात्रि शयन जमीन पर आसन बिछाकर करना चाहिये ।

अंग्रेजो के आक्रमण से पूर्व लोग एकादशी को अवकाश रखते थे । उस दिन खेती बारी का काम भी बन्द रखते थे । बैल गाडी भी नहीं चलाते थे । प्रत्येक पन्द्रह दिन में सम्पूर्ण अवकाश का नियम था । लेकिन रविवारको अवकाश अंग्रेजो की बुद्धि की उपज है । इसलिये हमारी एकादशी गौड़ हो गयी ।

एकादशी को भगवान की विशेष पूजा करनी चाहिये । भगवान के कीर्तन का गान करना, शास्त्रों का वांचन करना, देव का दर्शन करना, उत्सव करना, भगवान की मूर्ति का चिन्तन करना इत्यादि कार्य रात्रि के १२ बजे तक करते रहना चाहिये । रात्रि जागरण नहीं किया जाय तो आधा, फल मिलता है । भगवान के भक्तों को एक साथ मिलकर भजन करनी चाहिये । इसलिये कि सभा में या उत्सव में बड़ी सरलता के साथ व्रत उपवास हो जाता है । अपने संप्रदाय में कितने सत्संगी एकादशी के दिन गांवो के मंदिरों में भी मौन रहते हैं पठन, कीर्तन, माला, प्रदक्षिणा इत्यादि करते है । ५ दिन में कम से कम एकवार आत्मकल्याण के लिये इतना तो अवश्य करना चाहिये ।

जो भक्त श्रद्धा के विना व्रत करता है पशु के मांसपिंड के समान भार रुप ही है । लेकिन जो सावधान होकर व्रत करता है उसकी श्रीजी महाराज सर्व विधरक्षा करते है । अनिवार्य संयोग के विना यात्रा भी नहीं करनी चाहिये । इसका कारण यह कि यात्रा में अनेकों अज्ञात रुप से हिंसा होती है । अपने गाँव में मंदिर हो तो पैदल चलकर जाना चाहिये । अपने गाँव के मंदिर से बड़ा कोई तीर्थ नहीं हैं । यह वात सभी को जानने योग्य है । ब्रह्मानंद मुनि ने कहा है कि कोटी गायों केदान का जो फल है वह एक एकादशी व्रत करने का फल बताया गया है । इसके अलावां एक हजार तपस्वीयों के भोजन कराने का जो फल है वह एक वर्ष तक एकादशी व्रत करने में है । करोड़बार गंगा स्नान का जो फल है वह एक एकादशी व्रत करने का फल बताया गया है ।

जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न (भोजन) खाता है वह सबसे बड़ा पातकी कहा गया है । व्रतों का राजा एकादशी व्रत है । अपनी संस्कृति में ३६५ दिन में २४० व्रत आते हैं । जो किसी न किसी रुप में जीवन में उपयोगी होते है । लेकिन कलियुग में १५ दिन में एकवार आनेवाली एकादशी के भीतर सभी व्रतों का समावेश हो जाता है । इसलिये अन्य व्रतों के उपवास करने का उल्लंघन नहीं होता है । व्रत करने से पूर्वजो को मुक्ति मिल सकती है

तो जो करेगा उसे फल क्यों नहीं मिलेगा ? श्रीजी महाराज प्रत्येक एकादशी को बड़े-बड़े उत्सव करते थे। व्रत, उपवास करवाते थे । श्रीमद् भागवत में नवम स्कन्धमें व्यासजीने लिखा है कि, अंबरीष राजा ने एक वर्ष तक एकादशी व्रत कर रहे थे उसी समय दुर्वासा जैसे तपस्वी वहाँ आते है और उनका तप निष्फळ जाता है। दुर्वासा की रक्षा भगवानने भी नहींकिया। इसका कारण यह कि एकादशी के व्रत से प्रसन्न होकर भगवान ने अंबरीष रक्षा के लिये सुदर्शन चक्र को रखा था।

एकादशी व्रत के एक वर्ष पुरा होते ही प्रबोधिनी एकादशी को यधाविधिउद्यापन किसी पुण्य स्थान में करना चाहिये। धर्म सिन्धु में एकादशी को दो प्रकार बताया है । एक व्रत दूसरा उपवास । मुक्ति के लिये उपवास तथा कामनाओं की पूर्ति के लिये व्रत करना चाहिये । स्त्रियां व्रत या उपवास अपने पति की आज्ञा लेकर ही करें।

सत्संगिजीवन प्रकरण-३, अध्याय ३९ में लिखा है कि एकादशी व्रत के दिन अन्न खाने से पुण्य का नाश होता है। पूर्वजो का भी पतन होता है। एकादशी व्रत करने वाले की सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

हजार अश्वमेधयज्ञ, सौ राजसूय यज्ञ से अधिक एकादशी व्रत का महत्व बताया गया है। जिसके घर में एक व्यक्ति भी एकादशी का व्रत करता है उसके घर में यमदूत नहीं आते । एकादशी परमात्मा के नेत्र से प्रगट होने वाली पतिव्रता पत्नी है । उसे धारण करने से व्रत करने वाला व्यक्ति परमात्मा में अखंड वास करता है।

अनिवार्य संयोगो में एकादशी व्रत एकादशी तिथि को न हो सकी हो तो द्वादशी के दिन व्रत करना चाहिये। इसके अलांवा अज्ञान में या रोगादिक आपत्तिकाल में अथवा गुरुवचन या औषधिसेवन में व्रत भंग का दोष नहीं लगता है।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

गोपालानंद स्वामी की स्कूल

- शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

खुशाल भट्ट की स्कूल में जो पढने जायेगा वह संसार सागर से पार हो जायेगा । वह डूबेगा नहीं । अब प्रश्न यह है कि खुशाल भक्त ने जो स्कूल प्रारम्भ की थी वह बन्द हो गयी या चालू है ? नहीं, चालू है । हम सभी उसी स्कूल के विद्यार्थी है और प्रतिदिन उस स्कूल में आकर स्वयं खुशाल भगत (गोपालानंद स्वामी) हम सभी का पीरियड लेते हैं ।

स्वामी कहते है कि जीवन में सत्संग निर्विघ्न रखना हो और आत्मकल्याण की चाहना हो तो नव प्रकार के वाना को समझ लेना चाहिये । मोक्ष में विघ्न न आवे ऐसी इच्छा हो तो स्वामिनारायण भगवान के धाम में जाना हो और उसमें कोई विक्षेप न आवे ऐसी चाहना हो तो अपने सत्संग को दृढ रखना होगा, अपने परिवार में सत्संग की परंपरा रखनी चाहिये ।

गोपालानंद स्वामी की वातें तो नस में इंजेक्सन जैसी वात है । पहली वात - दृढ उपासना, अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान सर्व कर्ता, सर्व हर्ता, मैं सुखी हूँ - भगवान स्वामिनारायण की कृपा से, मैं दुःखी हूँ विचार नहीं आता है । कितने लोगों को नवग्रह परेशान करते है, किसी को दसवां भी परेशान करता है लेकिन भगवान के भक्त को कोई परेशान नहीं करता । फिर भी दुःखी होना हो तो भगवानकी आज्ञा का लोप करने से भगवान खुद ही उसे शिक्षा देते हैं । इस वात की स्पष्टता भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में किया है । काल, कर्म, तथा माया का क्या अस्तित्व जो भगवान के भक्त को परेशान कर सके । जो भी कुछ खराब होतो समझना चाहिए कि आज्ञा का लोप कहीं न कहीं अवश्य हुआ होगा । भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा का सर्वोपरि पालन ही जीवन को दृढ वना सकता है ।

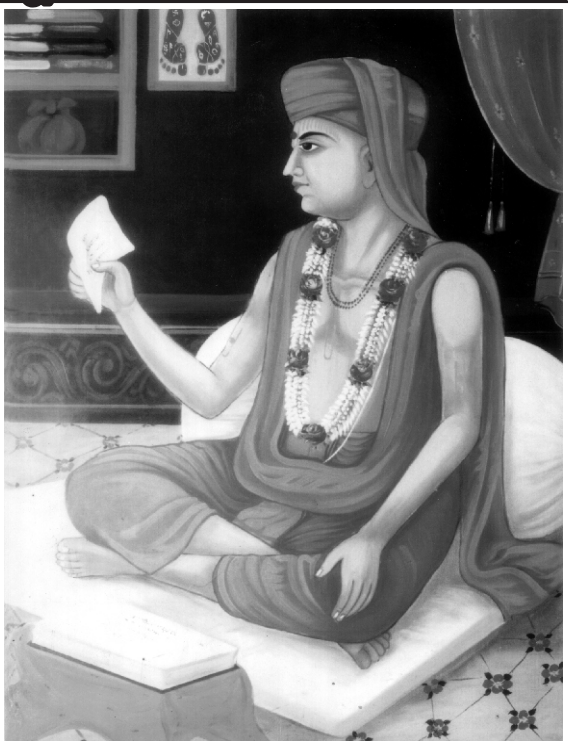

दूसरी वात : नियम की दृढता - अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान ने जो नियम बताया है जैसे - नियम अर्थात् पंच - वर्तमान - दारु, माटी, चोरी, अवेरी तथा अदला बदली, इन सभी का नियम पूर्वक पालन करना । इस विषय में प्रेमानंद स्वामीने लिखा है कि ''निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तब घनश्याम इसमें इग्यारह नियम बताया गया है । इन में ही पांच नियम समाये हुए हैं । जिस तरह की उपासना हो उस तरह की उपासना में दृढता होनी आवश्यक है । महाराजने वनचामृत में कहा है कि पक्का हरिभक्त वही है जो नियम, निश्चय और पक्ष में दृढता रखे ।

तीसरी वात : शुभ देश में रहना । शुभ देश का मतलब - जहाँ संत रहते हो, जहाँ मंदिर हो, जहाँ कथा

होती हो । इसे शुभ देश कहे तैं । ऐसे देश में रहना चाहिये । थोडा कम मिलता हो चलेगा लेकिन शुभ देश में ही रहना चाहिए ।

चतुर्थ वात : शुभ काल में रहना, शुभ काल का मतलब - अच्छा समय, जैसे प्रातः काल का शुभ मुहूर्त, उस समय पूजा, पाठ, माला, ध्यान करना । सायंकाल शिक्षापत्री में आज्ञा के अनुसार मंदिर में जाना, कथा करना, कथा सुनना इत्यादि शुभ काल है ।

पांचवी वात : मन- कर्म से तथा वचन से संतो का सत्संग करना । मन से संतो का साथ करना, वचन से साधु पुरुष की प्रशंसा करना, कर्म अर्थात् संत की सेवा करना ।

इन सभी शुभ कर्मो में विघ्न आता हो या स्वभाव खराब हो गया हो तो स्वभाव में परिवर्तन करना चाहिये । लेकिन संतो का साहचर्य कभी भी नहीं छोडना चाहिये । याद रखियेगा - यह गोपालानंद स्वामी की पाठशाला है ।

छठी वात : उत्तम श्रद्धावान होना । भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रतिष्ठित देव, आचार्य, शास्त्र, (शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन, वचनामृत, सत्संगिभूषण) तथा संत, सत्संगी । इन सभी में अटूट श्रद्धा । एलोग भी कहें वह भगवान स्वामिनारायण का वचन है ऐसा मनना चाहिए । उसी में श्रेय है प्रेय है ।

सभी भक्त एक समान नहीं होते ..... जैसे रेल के डिब्बे सभी एक समान नहीं होते । किसी में कुछ व्यवस्था तो किसी में कुछ भी नहीं । किसी में खूब भीड़ तो किसी में कम । किसी में सोने की सीट तो किसी में बैठने की । कोई डिब्बा ए.सी. वाला तोकोई जनरल । लेकिन सभी एक साथ ही प्लेट फार्म पर उतरते हैं - यदि वही गाड़ी पटरी से नीचे उतर जाय तो जितने भी मुसाफिर है वे अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच सकते हैं क्या ? इसी तरह जो श्रद्धावाले भक्त है वे कभी भी श्रद्धा के पाटे से नीचे न उतरें अन्यथा अपने गन्तव्य स्थान पर अर्थात् परमात्मा के अक्षरधाम को कभी नहीं पा सकेंगे ।

अब आता है सातवां नम्बर : यह सत्संग तथा विशाल समाज, हजारो संत, ब्रह्मचारी, पार्षद, लाखों हरिभक्त इन सभी में जो गुण है उसे ग्रहण करना । छोटा बालक हो वह कीर्तन गाता हो तो उसमें भी एक गुण है उसे धन्यवाद देना चाहिए । सब में गुणग्रहिता आनी आवश्यक है । सत्संग गुण ग्राहिता के ऊपर टिका हुआ है ।

आठवां नंबर आता है : देहाभिमान का त्याग करना । किसी को बिद्या का मान हो, किसी को स्थान का मान हो, किसी को पैसे का मान हो इत्यादि इत्यादि । देहाभिमान छोडना कैसे ? इसे सीखना पड़ेगा । अपने संप्रदाय में परम्परा है - दंडवत करने की । दंडवत करते समय ध्यान रखना चाहिए कि जिस तरह वस में या रेल वे में जाते हैं रुमाल इत्यादि से सीट साफ करके बैठते है या अन्यत्र कहीं बैठते हैं तो साफ करके बैठते है लेकिन मंदिर में विना साफ किये ही दंडवत प्रणाम करना चाहिये । क्योंकि उस धरती पर हजारो हरिभक्त, संतो के पैर पड़े होंगे । उस रजकण से अपनी शरीर शुद्ध, निर्मल, निर्मानी पना का भाव आयेगा, ''अडसठ तीरथ चरणों - कुंभ मेला में जाने से जो फल मिलता है वह मंदिर में दंडवत प्रणाम करने से मिलता है और देहाभिमान खत्म होता है ।

अब आती है नवमी वात : इसमें गोपालानन्द स्वामी कहते है कि - एक मंडल में रहना चाहिए, एक मंदिर का होकर रहना चाहिये किसी के अधीनस्थ नहीं रहना चाहिये । आप कही जाते है - विदेश या स्वदेश (बाहर) तो आप को आपके घर का पता मुख में ही रहता है जब कोई पूछता है तो तुरंत बता देते हैं, याद करने की या पूछने की जरुरत नहीं पड़ती है । इसी तरह हमें भी सहजानंदी सिंह बनकर रहना चाहिये कहने की जरुरत न

पड़े स्वतः भासित होना चाहिए। सियार बनके नहीं रहना चाहिये। सिंहोको बचाने के लिये लाखो रुपये सरकार खर्च करती है लेकिन श्रृंगाल सियार को बचाने के लिये कहीं पेपर में पढे हैं कि उसके पीछे सरकार कोई खर्च करती है। शूरवीर बनो सहजानंदी सिंहबनो एक मंदिर एक संत के प्रति समर्पित होना चाहिये। मूल संप्रदाय में अपनापन होना चाहिए उसी में आत्मभाव रखने से इह लौकिक पारलौकिक कल्याण निहित है।

इसीलिये गोपालानंद स्वामीने नव प्रकार की वातों को समझाया है। इन सभी आधारों से यह कह सकते हैं कि गोपालानंद स्वामीने जो पाठशाला खोली थी वह आज भी प्रारम्भ है। उस पाठशाला में पीरियड भरना होतो यहाँ के महंत स्वामीने ''गोपालानंद स्वामी की वातो'' नामक पुस्तक को प्रकाशित किया है, आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में से केवल नव वातों का आकलन करके स्मरण करना दूसरी बांतों को नहीं करो तो कोई बात नहीं। स्वामीने इसमें अगाधबाते कहीं है।

भजन का प्रकार, उपासना का प्रकार, स्वामिनारायण भगवान की महिमा, इत्यादि को समझने के लिये स्वामी की वातो का वांचन अवश्य करें।

(षष्टिपूर्ति महोत्सव के प्रवचन के आधार पर - सं. शास्त्री हरिप्रियदास)

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यों को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक प्रति मास के ११ ता. को नियत समय पर पोस्ट की जाती है। फिर भी जिन्हे समय से न मिले वे २० ता. के बाद ग्राहक नं. तथा अपने विस्तार में आई हुई पोस्ट आफिस का पिनकोड नं. लिखकर यहाँ के मासिक कार्यालय को सूचित करना चाहिये। इसके साथ ही अपने विस्तार की पोस्ट आफिस में लिखित पत्र द्वारा जानकारी देनी चाहिये।

आभार स्वीकार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर) द्वारा लिखी गयी तथा दासभाई (हर्षदकालोनी) के सहयोग से श्री स्वामिनारायण म्युजियम द्वारा नूतन प्रकाशित ''श्रीहरि चरित्र'' (पूर्वार्ध) पुस्तक का फाल्गुन शुक्ल-३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विमोचन किया गया। यह पुस्तक श्री स्वामिनारायण म्युजियम से तथा कालुपुर मंदिर के साहित्य केन्द्र से प्राप्त हो सकती है।

अपने आगामी उत्सव

चैत्र कृष्ण-२ ता. २७-४-२०१३ शनिवार को मांडवी (कच्छ) श्री घनश्या महाराज का पाटोत्सव।

चैत्र कृष्ण-३ ता. २८-४-२०१३ रविवार को प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव।

वैशाख शुक्ल-३ ता. १३-५-२०१३ सोमवार अक्षय तृतीया को ठाकुरजी का चंदन चर्चित दर्शन, उनावा मंदिर पाटोत्सव।

वैशाख शुक्ल-५ ता. १५-५-२०१३ बुधवार श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज पाटोत्सव, सर्वोपरि छपैयाधाम बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव।

वैशाख शुक्ल-६ ता. १६-५-२०१३ गुरुवार माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

वैशाख शुक्ल-१० ता. २०-५-२०१३ सोमवार मथुरा (यु.पी.) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री नरनारायण हरिकृष्ण सत्य हैं।

स्वस्ति श्री अमदावाद महाशुभ स्थान सर्व शुभ उपमा योग्य चोपदार कुबेर संघजी प्रत्ये श्री गढडेथी लि. स्वामी सहजानंदजी महाराजना नारायण वांचजो अपरंच लिखाकारण एम छे के ठक्कर लाधा तथा हरजीने सरकार मां काम छे ते बाबत एमनुं माणस तम पासे आव्युं छे तेनी हकीकत एमना कागड़ मां लखी छे ते प्रमाणे तेमनुं काम सर लईने करजो एवात मां ढील करशो संवत् १९९१ ना मागशुर सुदी-१४ रविवारे लख्यो छे लेखक शुक मुनिनां नारायण वांचजो।

चोपदार कुबेर संघजीने पत्र पोचे अमदावादनो छे।

उपरोक्त पत्र म्युजियम के होल नं .२ में दर्शनार्थ रखा गया है।

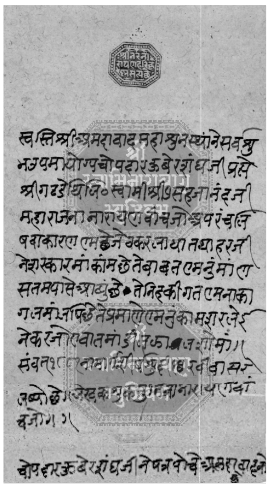

फाल्गुन शुक्ल तृतीया अपने सत्संग के लिये दो तरफ आनंदका दिन हो गया है। श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठातिथि के साथ श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का विश्व का अजोड़ ऐसा श्री स्वामिनारायण म्युजियम का यह स्थापना दिन है। इस समय ता. १४-३-२०१३ को म्युजियम का दूसरा स्थापना दिन खूब धूम धाम से मनाया गया था। श्रीजी महाराज के तीनो अपर स्वरुप के साथ १०८ यजमान बनकर अभिषेक तथा समूह महापूजा का लाभ लिये थे। प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता के लिये हरिभक्त मुख्य यजमान बने थे। प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी यजमानो को दिव्य आनंद का लाभ दिया था।

बाद में १२ नं. के होल में कीर्तन भजन के साथ यजमानों को सम्मानित किया गया था। जहाँ पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभाशिर्वचन का सभी को लाभ मिला था। अन्त में सभी लोग महाप्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में स्थापित प्रत्येक प्रसादी की वस्तुओं में प्रभु की एक अनोखी महक है, जो आज भारत वर्ष में ही नहीं बल्कि, विश्वफलक पर फैल रही है। इस सुगन्धके पराग को प्रस्फुटित करके दिग दिगन्त तक फैलानेवाले प.पू. बड़े महाराजश्री श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अद्यावधितक के तपः प्रसाद का प्रतिफल है, इस तरह की विदेश की धरती यु.एस.ए. (अमेरिका) से आये हुए डॉ. श्याम नारायण शुक्लजी तथा गुजरात सरयूपारीण ब्राह्मण समाज के उपाध्यक्ष (महाकाली मदिर एवं महालक्ष्मी मंदिर के अध्यक्ष) श्री शशिकान्त तिवारीजी तथा ब्राह्मण समाज के अन्य अग्रगण्य विद्वानो ने श्री स्वामिनारायण म्युजियम के तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के दर्शन प्रसंग पर यह बात कही थी, इसके अलांवा इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादीभूत वस्तुओं के हार्द के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री के त्याग भाव को जानकर और उन्हीं के उदात्त चरित्र एवं यावज्जीवन तपस्या की यह एक स्फुरणा है - इस तरह आगन्तुक मेहमान अनेको आनन्दानुभव के उद्‌गार को व्यक्त किये थे।

(डॉ. वाचस्पतिमिश्र (प्रधान पंडित) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मार्च-२०१३

रु. १००००० /-	स.गु. पुराणी स्वामी धर्मस्वरुपदासजी गुरु स्वामी गोविंदप्रसाददासजी के आत्मीय भक्तों की तरफ से - अमदावाद कालुपुर।
रु. १००००० /-	अ.नि. महंत सां.यो. धनबाई के पारायण प्रसंग पर (भुज-कच्छ)
रु. १८००० /-	सां.यो. नीताबाई।
रु. १८००० /-	सविताबाई।
रु. १८००० /-	लताबाई।
रु. १८००० /-	दक्षाबाई।
रु. १८००० /-	जवाबाई
रु. १००००० /-	श्री प्रविणभाई नारणभाई पटेल, नवरंगपुरा।
रु. ५८००० /-	एक धर्मकुल हरिभक्त, अमदावाद।
रु. ११००० /-	श्री वाराही खोडीयार युवक मित्र मंडळ, धमासणा।
रु. ११००० /-	श्री धीरजभाई करशनभाई पटेल, अमदावाद।
रु. ११००० /-	श्री हितेशभाई मुलजीभाई पटेल, मेमनगर।
रु. ११००० /-	श्री स्वामिनारायण मंदिर, घाटलोडिया।
रु. ७५०० /-	इडर कस्बा मुस्लिम मोटी जमात।
रु. ७५०० /-	इडर मनसूरी (धांची) जमात।
रु. ५१०० /-	भाईलालभाई पोपटलाल पटेल, जोषीपुरा विरमगाँव।
रु. ५१०० /-	श्री इश्वरभाई कानाभाई चौधरी, माणेकपुर।
रु. ५००० /-	श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रस्टी, बापुनगर।
रु. ५००० /-	अ.नि. जीवाभा, अ.नि. जीवुबा के स्मरणार्थ कृते लक्ष्मणभाई जे. चावडा, जिज्ञेश लक्ष्मणभाई चावडा, बलोलवाला।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मार्च-२०१३)

ता. १४-३	म्युजियम के द्वितीय वार्षिकोत्सव के निमित्त समूह महापूजा।
ता. २६-३	नेहांग दिनेशभाई सावलिया, नवा नरोडा।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा।

नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

बालजीभाई की तरह शूरवीर बनो

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

धीरे धीरे गर्मी अपना प्रभाव बढाती जा रही है। गरमी के मौसम अनुसार बजार में खरबूज, तरबूज, द्राक्ष इत्यादि का आगमन जैसे राजा की सवारी की तरह पूर्व में प्रवेश कर गया है। इसके बाद फलों का राजा आम का आगमन होगा, तब गुजरात जैसे आम खाने की मजा कहीं नही होगी।

इस लिये भगवान स्वामिनारायण संत और भक्तों को कहते थे कि आम के रस और रोटी को खाने का आनंद गुजरात जैसे अन्यत्र कही नहीं है। भगवान स्वामिनारायण एकबार संत-हरिभक्तों केसाथ जेतलपुर पधारे। अक्षर महल में निवास किये। हरिभक्त संतो को झोलीभर भर कर आम चूसने को दिये। इसके बाद कहे कि आम चूसने के बाद अभी आम तथा रोटी के लिये जगह भी रखियेगा। इसतरह महाराज प्रतिदिन आम का रस तथा रोटी प्रसाद में लेते और संत हरिभक्तों को भी देते।

स्वामिनारायण भगवान जेतलपुर पधारे हुये हैं यह समाचार दूर-दूर तक के गाँवो में फैल गया। सुथरामपुर के गाँव के हरिभक्तों को इसकी खबर मिलते ही प्रभु के दर्शन के लिये निकल पड़ते हैं। दर्शनार्थियों में महिलाओं का एक बड़ा संघ चल दिया, लेकिन साथ में कोई पुरुषवर्ग नहीं था। अकेले महिलायें कैसे जा सकती है। उसी समय भगवान का एक परम भक्त वालजीभाई ब्राह्मण बड़ी शूरवीरता के साथ अकेले साथ चलने के लिये तैयार हो गया। कन्धे पर धनुष-तरकस लटका लिया और बहनों से कहा कि अब डरने की कोई जरुरत नहीं है। दृढ भाव से प्रभुदर्शन के लिये आप लोग तैयार होजाइये। मैं आप लोगों के साथ आ रहा हूँ. घर जाकर सभी बहनें रास्ते की सम्पूर्ण तैयारी करने लगी। एक संघ प्रभु दर्शन के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में जयघोष करते हुये, स्वामिनारायण भगवान के नामोरच्चारण करते हुये, भगवान के चरित्र का गुणानुवाद करते हुये आगे बढ रहे थे। दो पहर हो तो भोजन-प्रसाद लेने के लिये विश्राम करती। रात्रि में शयन वसेरा करते दूसरे दिन सायंकाल पहुँच जाना था। लेकिन प्रथम साम को संघ आगे बढ रहा था कि झाड़ियो के भीतर से एक आवाज आई कि कोई आगे बढेगा नहीं अन्यथा सभी का मरना निश्चित है। इतने में करीब ८-१० घुड़सवार सामने आकर खड़े हो गये।

सायंकाल का समय खूंखार घुड़सवारों को देखकर सभी डर गयीं। प्रभु का स्मरण करने लगी। इतने में डाकुंओ का सरदार बालजी के पास आकर बहकने लगा कि तुझे जीने की इच्छा हो तो तीर कमान नीचे रख दे।

एक कहावत है कि –

''चिता चडेली सती छुपे नहीं,
रीडर पड़े, राजपूत छूपे नहीं,
भीड़ पड़े शूरवीर छूपे नहीं।''

जिस तरह आषाढ में मेघ भयंकर गर्जना करते है ठीक उसी तरह बालजी गरजना करते हुये कहा कि जब तक मेरे हाथ में धनुषबाण है तब तक तुम लोगो के इस भेड़ियों के समुदाय के लिये एक मैं अकेला सिंह पर्याप्त हूँ। मेरे जीवित रहते तुम सभी एक साथ अथवा एकाकी भी किसी एक बहन को हाथ नहीं लगा सकते

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा – षष्ठिपूर्ति महोत्सव
तथा स.गु. गोपालानंद स्वामी का २३२ वाँ जन्म जयन्ती महोत्सव ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर (टोरडा - षष्टिपूर्ति महोत्सव तथा स

स.गु. गोपालानंद स्वामी का २३२ वाँ जन्म जयंती महोत्सव ।

शोभायात्रा

सन्मान

सांस्कृतिक कार्यक्रम

हो । लूट भी नहीं सकते ..... सावधान होजाओ .....।

इतना कहकर तीर की बरसात करने लगा । भगवान जिसकी रक्षा करने वाले हों उसको कौन मार सकता है । अन्तर्यामी भगवान सब कुछ जान लिये । भक्त की रक्षा के लिये ऐसा ऐश्वर्य बताये कि डांकुओ के छोड़े हुए तीर इधर-उधर हो जाते थे । बालजी के ऊपर एक भी तीर नहीं आये । बालजी जो भी तीर छोड़ते थे । वह एक भी खाली नहीं जाता था । डांकुओ को एक-एक करके बींधने लगे । उधर बहने भी असामान्य पराक्रम दिखाने लगीं । झांसी की रानी की तरह उत्साह के साथ उनका सामना करने लगीं । कुल महिलायें डाकुओं द्वारा फेके गये तीरों को एकत्रित करके बालजी को देने लगी, अब बालजी का उत्साह और द्विगुणित हो गया । पांच-छ डाकू घायल हो गये, ३-४ घुड़सवार पूंछ दबाकर भाग खड़े हुए । श्रीहरि की इच्छा से डाकुओं की तीर भी बालजी का बालवांका नही कर सकी । महिलाओं का भी कोई नुकशान नहीं हुआ ।

इस तरह महाराज ने भी आठ-दश बन्दूक धारी घुड़सवारों को रक्षा हेतु भेजें । सेवक संघ के पास पहुँच गये । अपने साथ बालजी को तथा बहनो को लेकर जेतलपुर आ गये । उस समय सभा चल रही थी । स्वामिनारायण भगवान सभा में बिराजमान थे । सभी प्रभु के दर्शन किये । महाराज सभा में उठकर उन बहनों की हिम्मत की सराहना करते हुये सभी को पुष्पहार भेंट में दिये । बाद में बालजी को गले लगाकर भेंटे और वक्षः स्थल पर चरणारविन्द की छाप दिये । प्रभु ने सभी को रास्ते में जो घटना घटी थी उस रहस्य को बताया, सभी बड़े आश्चर्य में हो गये ।

मित्रो ! आपको ख्याल आगया होगा कि बालजी कितने शूरवीर भक्त थे । बहने भी कितनी निडर शूरवीर भक्ता थी । इसीलिये लिखा है कि ''हिम्मते हुदा तो मददे खुदा'' - इसी प्रसंग पर ब्रह्मानंद स्वामीने भी लिखा है -

जो होय हिंमत रे नर ते उरमांही भारी,
दृढता जोईने रे तेनी मदद करे मुरारी .....।

इसी तरह हम भी शूरवीरता रखेंगे तो भगवान अवश्य मदद के लिये आयेंगे ।

•

प्रेम की भक्ति प्रभु तक पहुँचती है

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एक गाँव था । गाँव जहाँ होता है वहाँ वस्ती तो होती ही है । उस गाँव में प्रायः सभी किसान थे । कुछ व्यापारी भी थे । गाँव के बाहर एक कूंवा था । उस कूंवा के पास एक सुंदर मंदिर था । मंदिर की शोभा भक्तों से होती है । सुन्दर मंदिर, वहाँ सभी जाते, दर्शन करते, सफाई करते, नित्य पूजा करते, दर्शन, प्रार्थना, कथा इत्यादि होती रहती थी । उन सभी भक्तों में से एक भक्त को सद् विचार आया कि मुझे प्रतिदिन भगवान का अभिषेक करना है ।उस प्रेमी भक्तने सोचा कि धर्म कार्यं ढीला नहीं करना चाहिये इसलिये तुरंत पानी का लोटा लिया और अभिषेक करने लगा । अब वह उसी कूंये में से प्रतिदिन पानी खींचकर निकालता और उसी पानी से अभिषेक करता । सभी गाँव वाले उसकी प्रशंसा करने लगे । यह भी कहते कि भक्ति करने की अब यह नई रीति चालू कर दी है । इतने में किसी दूसरे भक्त को विचार आया कि हम भी प्रतिदिन अभिषेक करेंगे . विचार का आना अच्छी बात है लेकिन अच्छा विचारा ईर्ष्या विना का होना चाहिये । प्रेरणा अपने सुख और कल्याण के लिये हो तो प्रगति होती है । यह दूसरा भक्त अपने घर से एक पीतल का लोटा लेकर आया, अभिषेक किया । पहले भक्त को कहीं से तांबे का लोटा मिल गया, उससे अभिषेक करता यद्यपि वह गरीब भक्त था । लेकिन दूसरे भक्त के मन में ईर्ष्या का भाव आया वह अमीर था । तुरंत चांदी का लोटा खरीदा और उसमें दूधले जाकर अभिषेक करने लगा । उसके मन में हुआ कि यह मेरे सामने क्या है ? लेकिन पहले भक्त के मन में तो कुछ था ही नहीं जो स्थिति पहले थी वही अभी भी थी और कुछ था ही नहीं जो स्थिति पहले थी वही अभी भी थी और तांबे के लोटे में पानी लाना अभिषेक करना क्रम यह था । वह किसी की तरफ देखता भी नही था । समय वीतते दोनो का देहावसान होता है । यमदूत लेने आते हैं । दोनो को ले गये । यमराजा ने दूतों से कहा कि अरे मूर्ख दूतो !

आप लोग इनको यहाँ क्यों ले आये ? ये तो भगवान के भक्त हैं। देखते नहीं इनके मस्तक से तेज निकल रहा है। इन्हें पालकी मैं बैठाकर बैकुंठ लोक में छोड़ आओ। वहाँ से भगवान के पार्षद वैकुंठ में ले जायेंगे। इतने चांदी के लोटेवाले भक्त ने कहा कि यमराज ! मैं भी भक्त हूँ, मैने भी भगवान का अभिषेक किया है। तुम अभी बैठो, तुम्हारे मस्तक पर अन्धकार दिखाई दे रहा है। तुम्हे वैकुंठ में प्रवेश नहीं मिलेगा।

क्रिया तो दोनो की एक समान थी। लेकिन दूसरे भक्त में ईर्ष्या का भाव था, दिखावा था। वह सोचता था कि लोग मुझे देख रहे हैं, मैं जो कार्य कर रहा हूँ उससे विशिष्ट है, सभी मेरी प्रशंसा करें। यह भाई चांदी के लोटे से अभिषेक करता है, प्रतिदिन दूधचढाता है, कितना अच्छा है। इसका मतलब हुआ कि ईर्ष्या से की गयी भक्ति भगवान तक नहीं पहुंचती। प्रेम से की गयी भक्ति भगवान तक पहुंचती है।

इसलिये हमें भगवान को प्रसन्न करने के लिये भजन भक्ति करनी चाहिये। तभी भगवान प्रसन्न होते है। इन्हीं कारणो को ध्यान में रखकर भगवान स्वामिनारायणने वचनामृत में कहा है कि ''भगवान की भक्ति भगवान की प्रशंसा के लिये और अपने आत्म कल्याण के लिये करनी चाहिये। कोई प्रशंसा करे इसके लिये भक्ति नहीं करनी चाहिये, ईर्ष्या के भाव से भी भक्ति नहीं करनी चाहिये।

विना शुल्क - शैक्षणिक प्रवेश हेतु

प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रारंभ किया गया तथा प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम द्वारा संचालित संप्रदाय में एकमात्र श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय (प्रसादी की वाडी) में जहाँ पर ब्राह्मण विद्यार्थियों के लिये नि:शुल्क शिक्षण तथा छात्रालय की सम्पूर्ण सुविधा दी जायेगी . जिस में कक्षा ८ पास करके आये हुए विद्यार्थी को कक्षा ९ में प्रवेश दिया जायेगा। श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी संचालित स्नातक तथा स्नानतकोधर (डीग्री कालेज एम.ए.) तक के अभ्यास करके इच्छुक ब्राह्मण विद्यार्थी ता. १२-५-१३ को प्रातः ९-३० बजे इन्टरव्यु का समय रखा गया है उस समय कक्षा ८ पास की मार्गसीट लेकर उपस्थित रहें मर्यादित संख्या होने से जो पहले आयेगा उसे प्रथम एडमीशन दिया जायेगा।

संचालक/प्रंसीपाल

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय

जेदलपुरधाम, ता. दश्क्रोई

फोन : ०२७१८-२३३९६० (प्रसादीकी वाडी)

छात्रालय : ०२७१८-२८२५००

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"परमात्मा की भक्ति अहंकार रहित होकर करनी चारिये"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सत्संग करते है, भक्ति करते है, परोपकारी भाव रखकर भक्ति करते है, सब कुछ ठीक लेकिन इसमें अहंकार का भाव नहीं आने देना चाहिये । अपने स्वभाव को पानी की तरह बनाना चाहिए । पानी जिधर चाहे उधर ही बहता है लेकिन बहाव की ऊँचाई से बहता है क्या ? नही बहता । पानी सदा अपनी गति से नीचे की तरफ जाता है । कोई बड़ी नदी हो पानी की तेज धारा हो उसमें पत्थर बाधा रुप बनता हो तो नदी के पानी के वेग से वह पत्थर भी घिसकर शिवलिंग का रुप बनजाता है शालिग्राम का रुप बन जाता है । बाद में उस रुप की पूजा होने लगती है । इसका भावार्थ यह है कि पानी अपने स्वभाव को नही छोड़ता उसके बीच में कोई बाधा आती है तो उस बाधा को भी भगवान का रुप दे देता है । इसी तरह हमें भी अपने स्वभाव को नहीं छोड़ना चाहिये । अपनी भक्ति करने की रीति ऐसी होनी चाहिए कि सामने वाले के स्वभाव में परिवर्तन हो जाय । उनके मन में भी भक्ति करने का विचार आ जाय । जो व्यक्ति अहंकार पूर्वक भक्ति करता है वह भगवान की दृष्टि से गिर जाता है और नरकगामी होता है । किसी विषय में अपना बड़प्पन दिखाई नहीं देना चाहिए । यही सबसे बड़ी महत्व की बात है ।

बड़े बड़ाई न करे, बड़े न वोले बोल,
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मौल ॥

जिस तरह हीरा की अमूल्य कीमत होती है, लेकिन हीरा स्वयं अपने को बहुत कीमती हूँ ऐसा व्यक्त नहीं करता । इसी तरह बड़ा व्यक्तित्व वाला व्यक्ति भी अपने मुख से अपनी बड़ाई नही करता । लेकिन उसके द्वारा किया हुआ कार्य बोलता है । हमारे जीवन में भी ऐसा अनुभव होता है कि जब किसी आफिस में या किसी अन्य ऐसे जगह पर जाते है जहाँ पर कोई ऊँचे स्थान पर (पदपर) बैठा हो वहाँ देखने को मिलेगा कि वह व्यक्ति बड़ा ही नम्र होगा । अहंकारी व्यक्ति सदा अक्कडबाज होता है । अक्कड़ता ही गिरने की निशानी है । क्योंकि ? शरीर में से प्राण निकल जाने के बाद अपनी शरीर कठिन, अकर्ता, अक्कड हो जाती है । इसलिये सदा अच्छे कार्य करते रहना चाहिये । खराब कार्य से दूर रहना चाहिये । हम सभी से अज्ञात रुप में कितने ही गलत कार्य हो गये होंगे, उसका हम कभी विचार नहीं करते, लेकिन मंदिर में कुछ सेवा कर दिये तो उसकी दशबार याद करते हैं ।इसका अहंकार भी रखते हैं । इसलिये पाप को प्रकाशित करना चाहिये पुण्य को नहीं । मनुष्य जीवन में कैसा है पाप करना है लिकन फल नहीं भोगना है । पुण्य करते नहीं है फिर भी भगवान के पास मांगते रहते हैं ।आप मेरे इतना काम करदीजिये, इतना काम बाकी है, पूरा होजाय तो भजन भक्ति करेंगे । भगवान के पास मांगने की लिप्सा कम ही नहीं होती । ९०% प्रतिशत लोग भगवान के पास मांगने ही जाते हैं । भगवान अपने मालिक हैं । घर का नौकर अपने मालिक से कभी ऐसा कहता है इतना काम आपकर लीजिये नहीं न ? तो हमें भी भगवान के पास काम की याचना क्यों करना चाहिये । हमें तो भगवान का दास बनकर रहना चाहिये । हमें तो जैसे डॉ. के पास जाकर दवा चालू करते है, लेकिन दवा लाभ नहीं करती है तो दवा बन्द कर देते हैं । साथ में उस डॉ. को भी छोड देते है । इसी तरह भगवान के पास जाकर मांग-मांग करते है जब काम नहीं होता है भजन-भक्ति करना बन्द कर देते है, मंदिर में आना बन्द कर देते हैं । यद्यपि ऐसा नहीं होना चाहिए । भगवाने के पास शक्ति-बल, विवेक सद्बुद्दि मांगनी चाहिए जिससे भक्ति करने का आनन्द मिले भक्ति दृढ हो, मन से दुर्गण निकले, सम्पूर्ण आनन्द का भाव आ सके, इस भावना से भगवान के पास जाना चाहिए । सम्पूर्ण शराणति के विना आत्म कल्याण सम्भव नहीं है । बालक थक जाता है तो

माता की गोंद में जाकर बैठ जाता है । चौरासी लाख योनियों में भटकते भटकते जब थक जाता है और कुछ पुण्य विशेष होने पर उसे मनुष्ययोनि मिलती है। संयोगवश मनुष्य शरीर के साथ स्वामिनारायण भगवान का सत्संग मिला है । इसलिये अन्तःकरण को निर्मल बनाकर परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। नहीं तो विलम्ब होने पर परमात्मा कहीं अपनी गोंद में बैठाने से मना कर दें। इसका ध्यान रखकर ही जीव में क्रियाशील रहना चाहिए।

●

ॐ मनोनिग्रहयुक्तिज्ञाय नमः

- सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेडा)

शतानन्द स्वामी कहते है कि, हे प्रभु ! आपमन के निग्रह के लिये एक मात्र युक्तिजानने वाले हैं । मन को वश में करना केवल आपको ही आता है । मन को भगवान के स्वरुप में लगाये रखना ही मनोनिग्रह है। वृत्ति रुपी पुत्री को सद्‌गुण रुपी श्रृंगार से अलंकृत करके प्रभु के साथ परिणय कराना चाहिये । पुत्रीमां के घर जब तक होती है तब तक कुंवारी कही जाती है। विवाह के बाद उसे सधवा कहा जाता है। पति के साथ सत्यता से जीवन यापन करती है इसलिये उसे सधवा कहा जाता है। लेकिन उसे सोहागन नहीं कहा जाता है । सोहागन उसे तब कहा जाता है जब उसके उदर में संतान आती है। बीज का रोपण ही सोहागन का परिचायक है। भगवान के भक्त को भी सुहागन बनना है। भगवान के निश्चयरुपी गर्भ का हृदय में रोपण होने के बाद ही भक्तिरुपी फल का उदय होता है। स्त्री जिस तरह अपने गर्भ का जतन करती है, उसी तरह भगवान के भक्त को भी चाहिये जतन करे । निश्चयरुपी गर्भ का स्त्राप न हो जाय इसका सदा ध्यान रखना चाहिये । वृत्ति को कुंवारी बिना रखे उस वृत्ति को भगवान के साथ परिचय नन्द संतो की तरह करा ही देना चाहिये । जिन्हे भगवान का निश्चय है वह भगवान के साथ विवाहित होचुके है। सच्चे अर्थ में वही सुहागन है। उसी का अखंड सौभाग्य है।

मन को भगवान के लीला चरित्र में जोड़ देना चाहिये।

निद्राधीन न होकर सतत जाग्रत रहकर प्रभु का चिन्तन करते रहना चाहिये । इसका एकमात्र आशय यह है कि जगत की तरफ से अपने मन को हटाकर प्रभु में लगाना चाहिये। मनको वश में करना बड़ा कठिन काम है। वश में नही होगा ऐसा भी नहीं है। जब आप दुकान में जाते है तो व्यवस्थित व्यापार करते है तब मन एकाग्र होकर अपना काम करता है। व्यापार में नुकशान न हो इसका सदा ध्यान रखते है। मन इधर-उधर हुआ कि व्यापार भी कमजोर हो जायेगा । मन के निग्रह होने पर व्यापार सुदृढ होगा । मन का निग्रह होना आवश्यक है लेकिन जल्दी नहीं होता । व्यवहार के कार्य में जल्दी निग्रह होता है। अन्तः शत्रुओ के जीतने पर ही मन का निग्रह होना सम्भव है।

मनको जीतने का साधन क्या है ? मन को जीतने का साधन नवधा भक्ति है। भगवान का दर्शन करके हृदय में उतारना चाहिये। भगवान को चढे पुष्प को अपनी नासिका से सूंघकर अंतर में भगवान को उतारना चाहिये । कीर्तन गाकर वाणी द्वारा भगवान को अंतर में उतारना चाहिये । कथा का श्रवण करके कान द्वारा भगवानको अंतर में उतारना चाहिये। भगवान का गुणानुवाद करके अन्तर में उतारना चाहिये । मन बुद्धि, चित्त, इत्यादि इन्द्रियों द्वारा भगवान का संबन्धरखना चाहिये । तभी दुःख से निवृत्ति और आत्यन्तिक कल्याण संभव है।

चंचल मन को जीतना बच्चों का खेल नहीं है। आंधी तूफान को कोई कहे कि मैं उसे स्थिर कर दूंगा तो वह संभव नहीं है। आप अपने घर के भीतर चल ते पंखे की स्वीच बन्द करके रोक सकते है, लेकिन धरती के ऊपर बहते हुए पवन को रोकना बड़ा कठिन है।

मुक्तानंद स्वामी ने लिखा है - कि -

पीपर पत्र पताकपट विद्युत कुंजर कान ।
मुक्त कहे मनुजाद ज्युं स्थिरनरहत एक ध्यान ॥

पीपलका पत्ता, ध्वजा का पताका, आकाश की बिजली, हाथी का कान - कभी भी स्थिर नहीं रहता इसी तरह मन भी स्थिर नहीं रहता। मन को स्थिर करने का एक मात्र साधन भगवान में मन को लगाये रखना । मन जब खाली रहेगा तब इधर-उधर भटकता रहेगा इसलिये मनको प्रभुमय बनाने की जरुरत है।

●

भगवान तथा भक्त

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल-कडी)

भगवान तथा भक्त, भक्त तथा भगवान । इन दोनो को जोडने का काम भक्ति करती है । भक्ति भगवान से मिलाने का एकमात्र साधन है ।

भगवान श्री कृष्ण गीता में भगवान को प्राप्त करने का तीन मार्ग बताया है । कर्म, ज्ञान, भक्ति ।

कर्म : प्रत्येक जीव अपने वर्ण या आश्रम के अनुसार कर्म को करे । यदि नियत कर्म के अनुसार निष्ठापूर्वक कार्य सम्पादन करे तो अवश्य प्रभु को प्राप्त करेगा । स्त्री का कर्म पतिकी सेवा, पुत्र का कर्म - मा-बाप की सेवा पतिसेवा द्वारा अनुसूया तीन देवों को पुत्र के रुप में प्राप्त की थी । मा-बाप की सेवा से पुंडरीक भगवान पंढरीनाथ (विठ्ठोबा) को बड़ी सरलता से प्राप्त कर लिये थे । आप अपना कर्म निष्ठापूर्वक करेंगे तो निश्चितही सफलता मिलेगी । लेकिन वह कर्म निष्काम होना चाहिये । कर्म का अटल सिद्धान्त है, उसका फल मिलना भी अटल है । लेकिन निष्ठापूर्वक होना आवश्यक । इसीतरह भगवान में जिसे सन्निष्ठा होगी तो भगवान अवश्य मिलेंगे ।

पुंडरीक मा-बाप की सेवा निष्ठा से किया तो भगवान को उसके पास जाकर दर्शन देना पड़ा था । मा-बाप की सेवा से वैकुंठपति भगवान वैकुंठ से आकर दर्शन दिये थे । इसी लिये भगवान लक्ष्मीजी के साथ उस गरीब की झोपडी में जाकर दर्शन दिये । झोपड़ी के बाहर से भगवान कहते हैं कि मैं तुम्हें दर्शन देने आया हूँ. तूं बाहर आकर दर्शन कर ले ।

पुंडरीकने कहा किप्रभु ! मैं मा-बाप की सेवा कर रहा हूँ, जब वे सो जांयेग फिर मैं बाहर आकर दर्शन करलूंगा । आप बाहर ही बैठिये, ऐसा कहकर एक ईंट उनके पास फेंका और कहा कि इसी पर आप बैठिये । उधर जो त्रिलोकी के स्वामी है जो सर्वशक्तिमान है वे उस ईंट पर तब तक खडे रहे जब तक मां-बाप की सेवा करके पुंडरीक बाहर नहीं आया ।

•

प्रेम के वश भगवान

- जिज्ञाशा जयंतीलाल राणफुरा (मोरबी)

प्रिय भक्तों ! प्रभु बड़े दायलु है । वे अपने गरीब भक्तों का प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं । प्रभु को धन-सम्पत्ति प्रिय नहीं है लेकिन उन्हें प्रेम से दिया जाने वाला सौगात बड़ा प्रिय होता है । यह बात है जेतलपुर गाँव की । यहाँ पर एक गरीब ब्राह्मण रहता था । उसका नाम था जीवण भक्त वह भिक्षावृत्ति से अपनी आजीविका चलाता था । उसे श्रीजी महाराज के प्रति बड़ा प्रेम था ।

महाराज जब भी जेतलपुर पधारते यज्ञ करते । जीवण भक्त प्रत्येक यज्ञ में सेवा करते । महाराज की सेवा करते और दर्शन करके प्रसन्न होते । सभा में बहुत सारे भक्त आते । वे सभी महाराज के लिये कुछ न कुछ भेंट लाते । यह देखकर जीवन भक्त के मन में होता कि में गीरब हूँ इसलिये महाराज को कुछ भेटं नहीं देपाता हूँ । उसी सयम घर जाकर पत्नी से कहे कि जिसके पास जो होता है वह महाराज को भेंट देता है । पत्नी ने कहा कि हमारे पास मठ का आंटा है कहें तो उसी की रोटी बनाकर दूँ । पति ने हां कह दिया और पत्नी रोटी बनाकर दी, वे उस रोटी को लेकर सभा में जहाँ महाराज विराजमान थे वहाँ लेकर गये । हरिभक्तों की भींड लगी थी, इसलिये जीवण भक्त दूर खड़े रह गये, महाराज उन्हें देखे, महाराज ने कहा - अरे ! जीवण भक्त के लिये रास्ता करो । यह सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ । सभी सोचने लगे कि ऐसा कौन भक्त है कि महाराज स्वयं उस भक्त के लिये रास्ता करने के लिये कह रहे है । इतने में महाराज अपने आसन से खडे होकर उसके पास गये और कहने लगे, क्या लाये हैं दीजिये । अपने हाथ में उनसे रोटी लेकर खाने लगे और प्रशंसा करने लगे । ब्रह्मानंद स्वामी को भी दिये । ब्रह्मानंद स्वामीने सभी को प्रसाद के रुप में बंटवा दिया । सभी के आनंद की सीमा न रही ।

गरीब भक्त के सुख का पार नहीं था । उसके रोम रोम में आनंद की लहर फैल गयी । ऐसे थे जीवण भक्त । उनके प्रेम को देखकर स्वयं भगवान सामने से चल कर उनके भोजन को स्वीकार किये ।

यह समझने लायक वात है । भक्त गरीब हो धनवान हो महाराज तो भक्त का प्रेम देखते हैं । उसके प्रेम के वश हो जाते हैं । अपने पास जो कुछ है वह महाराज का है यह भावना रखनी चाहिये और उनका होकर उनकी सेवा करनी चाहिये ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का १९१ वाँ पाटोत्सव महोत्सव मनाया गया

विश्व के संप्रदाय के प्रथम स.गु. आनंदानंद स्वामी द्वारा निर्मित हुए अहमदाबाद में बिराजमान राजाधिराज परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का १९१ वाँ प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव धर्मकुल की निश्रा में धूमधाम से मनाया गया।

पाटोत्सव प्रसंग के उपलक्ष में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अ.नि.स.गु. चितारा स्वामी बलदेवप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद मंदिर महंतश्री) के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव का १९१ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर प.भ. विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल (रिद्रोलवाले) ह. महेन्द्रभाई तथा भरतभाई आदि परिवार की तरफ से श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र का पंचान्ह पारायण ता. १०-३-१३ से ता. १४-३-१३ तक स.गु.शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी गुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी स.गु.शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी गुरु स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर मधुर संगीत के साथ सम्पन्न हुआ।

कथा का शुभारंभ प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ। फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२ ता. १३-३-१३ बुधवार को श्रीहरियाग के साथ महापूजा हुई। जिस का यजमानश्री के समस्त परिवारने लाभ लिया।

फाल्गुन शुक्लपक्ष-३० तीज को प्रातः ६-३० बजे परम कृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से सम्पन्न हुई। लाईव टेलीकास्ट तथा बड़ी मूवी स्क्रीन पर भी महाभिषेक आरती दर्शन करवाया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की। श्री नरनारायणदेव के पूजारी स्वामीने भी सुदंर व्यवस्था की। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रृंगार आरती हुई। उसके बाद प्रसादी के मंडप में श्रीहरि के अपर स्वरुपो की उपस्थिति में १९१ में पाटोत्सव की प्रासंगिक सभा हुई। जिस में यजमान प.भ. विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल श्री महेन्द्रभाई तथा श्री भरतभाई आदि परिवारने तीनो अपर स्वरुप का पूजन-अर्चन भेट करके आशीर्वाद ग्रहण किये। अहमदाबाद मंदिर के पुज्य महंत स.गु.सा.स्वा. हरिकृष्णदासजी ने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य कहा। उन्होंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से आगामी २०१४ दिसेम्बर वर्ष श्री नरनारायणदेव मंदिर, सुवर्ण सिंहासन आदि कार्य पूर्ण किये जाने की घोषणा की। उसमें सभी के सहयोग का आह्वान किया। संतो में स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी, स.गु. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी (भुज), पार्षद श्री जादवजी भगत (भुज), स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), स.गु.सा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा), सगु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी (मूली) आदि संत-हरिभक्तोंने देवो की महिमा का वर्णन किया। इस प्रसंग पर प.भ. गोरधनभाई सीतापरा द्वारा लिखित तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम द्वारा प्रकाशित "श्रीहरि चरित्र" पुस्तक का विमोचन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्रीने श्री नरनारायणदेव की कल्याण का एक मात्र विकल्प है ऐसा ज्ञान दिया। और सभी को आशीर्वाद दिये।

पाटोत्सव प्रसंग में कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी, राम स्वामी, भंडारी स्वामी, हरिचरण स्वामी (कलोल), चेतन भगत, भुरा भगत आदि संत मंडळने प्रेरणारुप सेवा की।

सुंदर सभापति का कार्य स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुळ) तथा स.गु.स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया था। (शा.स्वा. नारायणुनिदासजी)

श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव

श्री नरनारायणदेव जयंती - फूलदोलोत्सव अर्थात् आज से २०० वर्ष पहले सर्वोपरि इष्टदेव के भव्य प्रांगण में फूलदोलोत्सव मनाया गया। परंपरानुसार फाल्गुन शुक्लपक्ष-१५ से ता. २७-३-१३ श्री नरनारायणदेव जयंती बुधवार को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के

शुभ सानिध्य में ११-३० बजे संतो भक्तो के साथ नरनारायणदेव की आरती करके मंदिर के प्रसादी के विशाल चौक में भव्य प्रांगण में अद्‌भुत रंगो के कुंडो में से पिचकारी से संतो हरिभक्तों के साथ होली खेली । इस भव्य प्रसंग पर फूलदोलोत्सव के यजमान प.भ. नारणभाई शामजीभाई हिराणी, ध.प. हिरुबहन नरनारायणभाई हिराणी, सुत अशोकभाई नारणभाई हिराणी, ध.प. ज्योत्सनाबहन अशोकभाई हिराणी, पौत्री चांदनीबहन, दिव्यानीबहन तथा पौत्र हरेन्द्र मांडवी (कच्छ) वर्तमान में लंदन तथा संदिपकुमार विश्राम हालाई माधापर (विंदना) आदि परिवारने लाभ लिया था। स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी, राम स्वामी आदि संत पार्षद मंडलने सुंदर व्यवस्था की। (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) ८ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा तथा आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से ता. २०-३-१३ को एप्रोच मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. ३-३-१३ को मंदिर में आयुर्वेदिक नि:शुल्क केम्प रखा गया था । इस केम्प में डायरेक्टर डॉ. एम.ए. आचार्य (एम.डी. आयु.पी.एच.डी.) तथा उनकी टीम के द्वारा ३५० गरीबो की जाँच-निदान किया गया।

ता. १०-३-१३ को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा हरिभक्तो द्वारा पताका-बेनर के साथ बाईक प्रचार मूली का आयोजन किया।

महोत्सव अंतर्गत ता. १४-३-१३ से ता. २०-३-१३ तक जीवन ट्वीन बंग्लोस रोड के पास के विशाल ग्राउन्ड में वेदांत सांख्ययोगाचार्य स.गु.ा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रीय सप्ताह पारायण का सुंदर आयोजन किया गया। कथा प्रंसग में पोथीयात्रा, जन्मोत्सव, उत्सव मनाया गया । केन्सर गरीबो के लाभहेतु ५३ ब्लड गेनेट किया गया।

ता. १७-३-१३ को प्रात: समूह महापूजा का आयोजन किया गया। जिस में २०१ हरिभक्तोंने लाभ लिया। महापूजा की पूर्णाहुति पू.. लालजी महाराजश्री के हाथो से समपन्न हुई। पू. श्री राजाने बालिका मंडलके साथ रास तथा रमतोत्सव में भाग लिया। प.पू.असौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्रीने तथा प.पू.असौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़ी गादिवालाश्रीने पधारकर बहनो को दर्शन आशीर्वाद दिये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने रात में कथा-श्रवण करने पधारे थे।

ता. २०-३-१३ को. प.पू. बड़े महाराज के हाथों से बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम हुए थे । अलग-अलग मंदिरो से संत पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे। प.पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । प्रतिदिन सभा संचालन शा. यज्ञप्रकासदासजी करते थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। पाटोत्सव के दिन महाप्रसाद का आयोजन किया गया था। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ का पाटोत्सव (प्रांतिज देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में १६ वां पाटोत्सव प.भ. कोठारी चिमनभाई भुलाभाई की तरफ से धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस प्रसंग पर यजमान परिवार द्वारा श्रीमद् भागवत पंचाहन पारायण शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) के वक्तापद पर हुई थी । इस अवसर पर शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुरधाम) शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंत) तथा चन्द्रप्रकाशदासजीने कथा का लाभ दिया था । समग्र प्रसंगका आयोजन स्वा. अखिलेश्वरदासजीने किया था। गाँव के भक्तों का सुदंर सहकार मिला था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे तब स्वागतोत्सव की धूमधाम तैयारी की गयी थी। प.पू. महाराजश्री ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे। बाद में वहाँ पर यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. महाराजश्री की आरती उतारी थी। अंतिम दिन पूरेगाँव के लोग कथा में भाग लिये थे। श्री जसुभाई पटेल नरेश भगत, जे.डी. भगत, सुरेशभाई, चिमनभाई इत्यादि सेवा सराहनीय थी।

(मथुरा महंत स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा पाटोत्व

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का १५ वाँ पाटोत्सव प.भ. जिगरभाई सुभाषभाई

सोनी परिवार द्वारा सम्पन्न किया गया।

इस प्रसंग पर स्वा. अखिलेश्वरदासजीने महापूजा करवाकर षोडशोपचार से अभिषेक तथा अन्नकूट की विधिकरवायी थी। महिला मंडल तथा हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। शास्त्री स्वामीने भगवान की महिमा का वर्णन किया था। (कोठारीश्री रसिकभाई)

वरसोडा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वरसोडा गाँव ता. ३-३-१३ को रात्रि ८-३० से १०-३० तक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में स्वा. माधवप्रियदासजी (सिद्धपुर) तथा शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजीने कथा करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था। (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा का पंचम वार्षिक प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनमारायण मंदिर भाउपुरा का पंचम वार्षिक महोत्सव ता. ४-३-१३ को धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस प्रसंग पर ता. ३-३-१३ को रात्रि सभा में जेतलपुर से शा.भक्तिनन्दनदासजी तथा के.पी. स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी तथा आत्मप्रकाश स्वामीने कथा की थी। ता. ४-३-१३ को प्रातः काल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का धूमधाम के साथ स्वागत किया गया था। बाद में मंदिर में अन्नकूट की आरती की गयी थी। यजमान परिवार के घर पर महाराजश्री पदार्पण करके पुनः सभा में पधारे थे। प.पू. महाराजश्री को ४० फुट का हार पहना कर स्वागत किया गया था। पाटोत्सव के यजमान श्री केशवलाल पटेल सुपुत्र अशोकभाई पटेल परिवारने प.पू. महाराजश्री की आरती उतारी थी। बाद में आगन्तुक संतो में से पू. पी.पी. स्वामी, नारणपुरा, जेतलपुर, कांकरिया, महेसाणा, कालुपुर सायला इत्यादि धामो से आये हुये संतो ने प्रवचन किया था। सभापति स्थान भक्तिनन्दन स्वामीने सम्हाला था। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये थे। (शा.भक्तिनंदनदासजी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा का पंचम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का पंचम वार्षिक महोत्सव ता. १-३-१३ को धूमधाम के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों मनाया गया था। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री दोनो मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारकर छपैयाधाम सोसायटी में बहनो के मंदिर का भूमिपूजन किये थे। प्रासंगिक सभा में बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन यजमान परिवार के द्वारा किया गया था। भूमिदान करने वाले यजमान का सन्मान किया गया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभाजनो को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर जेतलपुर धाम से शा.भक्तिनन्दनदासजी तथा कांकरिया से यज्ञप्रकाशदासजीने कथा करके सभी को प्रसन्न किया था। सभी भक्तजन प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे। समग्र आयोजन जेतलपुर धाम के महंत के.पी. स्वामी तथा छपैयाधाम के पुजारी वासुदेवचरणदासजी तथा पुजारी घनश्यामस्वामीने किया था। (के.पी. स्वामी जेतलपुरधाम, संजयभाई, राकेशभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी में भाईयो तथा बहनो के मंदिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा पाटडी मंदिर की सां.यो. शांताबा एवं उनकी शिष्याओं के अथक प्रयत्न से यहाँ के मंदिर का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस महोत्सव में ता. २३-२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महराजश्री के वरद् हाथों से शास्त्रोक्त विधिसे सभी कार्य सम्पन्न हुए थे। इस प्रसंग पर ता. २२-२-१३ को रात्रियभजन का कार्यक्रम रखा गया था। जिस में बडी संक्या में भक्तों ने लाभ लिया था। २३-२-१३ को प्रातः काल ठाकुरजी की महापूजा बहनो के मंदिर में की गयी थी। प.पू. महाराजश्री का अगल बगल के गाँवो में नवयुवानो ने करीब ७०० जितनी बाइक पर सवार होकर स्वागतार्थ आगे आये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री शोभायात्रा में जब विराजमान हुये उस समय जयजयकार की ध्वनि से पूरा आकाश गूंज उठा था। खूब धूमधाम से नरनारी इस शोभायात्रा में भाग लिये थे। यह शोभायात्रा बहनो के मंदिर तक जाकर पूर्ण हुई थी। इसके बाद प.पू.

आचार्य महाराजश्री के हाथों महाभिषेक किया गया था । अभिषेक के समय भक्तोंने पुष्पवृष्टि करके भगवान का तथा आचार्य महाराजश्री का अभिवादन किया था पुरुषों के मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री संतो के साथ पधारकर अन्नकूटकी आरती किये थे । प.पू. महाराजश्री यजमान परिवार के घर पदार्पण किये थे । बाद में बहनो के मंदिर में अन्नकटू की आरती करके सभा में विराजमान हुए थे । सभा में ट्रस्टी रसिकभाई, रमणभाई, नारणभाई इत्यादि लोगोने महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था । इस प्रसं गपर अनेकों धामो से संतवर्य पधारे थे । जिस में जेतलपुर से पू.पी.पी. स्वामी, कांकरिया, महेसाणा, मकनसर, कलोल पंचवटी, अमदावाद, सायला, सुरेन्द्रनगर, मूली, इत्यादि धामों से करीब ३५ जितने संत पधारे थे । सभी ने सत्संग के ऊपर प्रवचन किया था । प.पू. गादीवालाजी की आज्ञा से पाटडी के सत्संग को मजबूत बनाने का जो सतत प्रयास करती है ऐसी शांताबा कोप्रसादी का हार बहनों द्वारा पहनवाकर प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था । अभ्यागतो का सन्मान किया गया था । इस अवसर पर श्रीनरनारायण युवक मंडल की रचना करके प्रमुख पद पर जिज्ञेशभाई को नियुक्त किया गया था । करीब ४० जितने युवान सदस्य बने थे । अंत में प.पू. आचार्य महारजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए कहाकि आप सभी श्री नरनारायणदेव का होकर रहियेगा । दृढ निष्ठा होगी तभी आने वाले बालकों में सत्संग का सिंचन संभव है । बालकों को भी मंदिर में तथा सभा में लाना आवश्य कहै इस कार्यक्रम की आभार विधिनारायणभाईने की थी । संचालन का कार्य भक्तिनन्दन स्वामीने किया था । स्वा. हरिप्रियदासजी तथा यज्ञप्रकाशदासजी सहायक बने थे । स्वयं सेवकों की सेवा सराहनीय थी । सभी प्रसाद लेकर धन्य बने थे ।

(शा. भक्तिनंदनदासजी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से महेसाणा मे बिराजमान भगवान स्वामिनारायण, भगवान श्री नरनारायणदेव, राधाकृष्णदेव, गणपतिजी, हनुमानजी इत्यादि देवों का चतुर्थ पाटोत्सव २७-२-१३ बुधवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों धूमधाम से संपन्न किया गया । इस प्रसंग पर २५-२-१३ को प्रातः काल त्रिदिनात्मक विष्णुयागका प्रारंभ श्यामचरण स्वामी, उत्तम स्वामी, हरिप्रिय स्वामी इत्यादि संतोने किया था । रात्रि में नीलकंठ वर्णी की कथा होती थी । कथा के वक्ता पू. पी.पी. स्वामी जी थे । २७-२-१३ को प्रातः चतुर्थ पाटोत्सव प्रसंग पर महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न किया गया । उस समय पुष्पवृष्टि तथा जयनाद करके सारे वातावरण को रम्य बना दिया गया था । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री यज्ञ नारायण की पूर्णाहुति करने यज्ञ मंडप में पधारे । आरती करके सभा में कथा की पूर्णाहुति किये । यजमान श्री नटवरभाई फूलचंद मोदी परिवार द्वारा प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया गया था । बाद में यज्ञ के यजमान तथा अन्य यजमानों का सन्मान किया गया था । पधारे हुए मेहमानो का भी सन्मान किया गया था । इस प्रसंग पर अनेकों धामो से पधारे हुए संतो ने अपनी सुमधुर वाणी से सभी को समानित किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आगामी नव वर्ष तक के पाटोत्सव के यजमान बनने का नाम उद्घोषित किया गया था । सभा में धुन-कीर्तन होता रहा और अन्नकूट की आरती की गयी थी । सभी आगन्तुक मेहमान भगवान का महाप्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये थे। स्वयं सेवकों की सेवा सराहनीय थी । समग्र आयोजन महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा के.पी. स्वामी जेतलपुर मंदिर के महंतने किया था ।

(शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बारेजा का प्रथम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बारेजा का प्रथम पाटोत्सव ता. ७-३-१३ को धामधूम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर ता. ६-३-१३ को महाविष्णुयाग का शुभारंभ हुआ था । इस अवसर पर भव्यातिभव्य नगर यात्रानिकाली गयी थी । इसपाटोत्सव के यजमान श्री भाईलालभाई वरघाभाई पटेल परिवार जिस में श्री देवेन्द्रभाई तथा परेशभाई थे । इस पावन प्रसंग पर ७-३-१३ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । उनके स्वागत के लिये भव्य तैयारी की गयी थी । प.पू. बड़े महाराजश्री प्रथम मंदिर में पधारकर ठाकुरजी का अभिषेक

करके यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे। बाद में सभा में बिराजमान हुये थे। सभा में पू.महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था। बाद में आगन्तुक मेहमानो का सन्मान किया गया था। संतो की उपस्थिति में स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने प्रवचन में यजमान तथा सभा को सम्बोधित किया था। इस के साथ ही मकरनसर कांकरिया, अमदावाद से संत पधारे हुए थे। अपने प्रवचन में संतोने अपने उद्‌गार व्यक्त किया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इसके बाद यजमान परिवार के घर प.पू. बड़े महाराजश्री पदार्पण करके अपने स्थान पर पदार्पण किये थे। हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके स्वस्थान प्रस्थान किये थे। सभा संचालन शा.हरिप्रकाश स्वामीने किया था। युवानो की सेवा प्रसंशनीय थी। (शा.भक्तिनन्दनदासजी, जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणनगर द्वारा आयोजित त्रिदिनात्मक भागवत कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायणनगर गाँव में मोहनभाई ईश्वरभाई पटेल के स्मरणार्थ त्रिदिनात्मक भागवत दशम स्कंधपारायण का आयोजन ८-३-१३ से १०-३-१३ तक किया गया था। इस कथा के व्यासासन पर स्वामी भक्तिनन्दनदासजी गुरु स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी थे। अपनी अमृतवाणी का रसास्वाद सभी को कराये थे। भक्तिवल्लभ स्वामी तथा श्याम स्वामी संहितापाठ में विराजमान थे। इस पारायण के यजमान श्री निलमभाई अरविन्दभाई तथा हरिवदनभाई अरविंदभाई पटेल थे। ता. ८-३-१३ शुक्रवार को पोथीयात्रा निकाली गयी थी। पू. आत्मप्रकाशदास स्वामी तथा पू. पी.पी. स्वामी ने दीप प्रगट करके कथा की शुरुआत की थी। इस अवसर पर नारायणप्रसाद स्वामी (सायला) वासुदेवानंद स्वामी (छैपयाधाम) पू. जगतप्रकाश स्वामी उपस्थित थे। कथा के बीच-बीच में कृष्ण जन्मोत्सव, मुकुट लीला, गोवर्धन लीला, गोकुल रास रुक्मिणी विवाह इत्यादि मनाये गये थे। ता. ९-३-१३ को प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारकर बहनों को दर्शन तथा आशीर्वाद का सुख प्रदान की थी। ता. १०-३-ऋ१३ रविवार को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे, उस समय उ;होंने प्रथण वृक्षारोपण करके सभा में विराजमान हुये थे। जहाँ पर भक्तोंने उनकी आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर अनेकों धामो से संत पधारे हुये थे। जिस में धोलका, काकंरिया, कालुपुर , जमीयतपुरा, मूली, नारायणपुरा, मकसनर के संतोने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था। प.पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वाद में बताया कि नारायणनगर तो हमार मौसीआन है। यहाँ का सत्संग जेतलपुर से जुड़ा होने के कारण अति शुद्ध है। जेलपुर महंत के.पी. स्वामीने तथा हरिप्रसाद स्वामीने अथक परिश्रम करके कार्यक्रम को सुन्दर रुप दिया था। मंदिर के कोठारी तथा हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। दोनो समय हरिभक्त प्रसाद लेकर धन्यताका अनुभव करते थे।(महंत के.पी. स्वामी, तथा उर्वेशि पटेल, नारायणनगर)

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा ता. २३-१२-१३ को ली गयी परीक्षा का परिणाम

कुल २३३७ बैठक, १४७० अनुपस्थित कुल २३३७- परिणाम ७०% ९७ प्रतिशत।

<u>बाल सत्संग</u> : परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी (१) पटेल श्रेया विरेन्दर्भाई ९९%, घाटलोडीया। (२) पटेल सचिन रसिकभाई ९८%, कलोल।(३) पटेल साहिल रजनीशभाई ९८%, कलोल।(४) पटेल हरिकृष्ण घनश्यामभाई ९९%, मारुसणा । (५) पटेल गौतम विष्णुभाई ९९%, मारुसणा।(६) पटेल जिगर शैलेषभाई ९९%, मारुसणा।(७) पटेल कौशल हसमुखबाई ९८%, असारवा गुरुकुल । (८) शेकडा भौतिक अशोकबाई ९७%, असारवा गुरुकुल।(९) मकवाणा प्रवीण भरतभाई ९७%, असारवा गुरुकुल (१०) बावडा भूमि मनीषबाई ९४%, सुरेन्द्रनगर । (११) पटेल निलेश मनुभाई ९६%, आनंदपुरा।(१२) पटेल निमा बहन घनश्यामभाई ९६%, आनंदपुरा।(१३) पटेल श्रेया भूपेन्द्रभाई ९८%, मारुसणा।(१४) पटेल किशन भूपेन्द्रभाई ९८%, मारुसणा।(१५) पटेल भव्याबहन विनोदबाई ९८%, (१६) पटेल हार्षिल महेशबाई ९६%, मारुसणा । (१७) मावाणी हिरेन रमेशभाई ९६%, असारवा गुरुकुल।(१८) पटेल चिंतन भीखाभाई ९६%, असारवा गुरुकुल । (१९) पटेल परसोतम राघेश्याम ९६%, असारवा गुरुकुल । (२०) जादव रामदेव बूटाभाई ९६%, असारवा गुरुकुल।(२१) पटेल उर्वीश हर्षदभाई ९६%, कलोल । (२२) पटेल कुलदीप बिपीनभाई ९६%, कलोल।

<u>किशोर सत्संग भाग-२</u> :(१) चौहाण घनश्यामभाई अरविंदभाई ९४%, कोटेश्वर । (२) प्रजापति कौशिक लालजी भाई ९४%, कोटेश्वर।(३) वैद सचिन मनिषभाई

९४%, कोटेश्वर । (४) पटेल टिंवकल रमेशभाई ९७%, मारुसणा । (५) पटेल जिज्ञाबहन विष्णुभाई ९९%, मारुसणा । (६) पटेल भव्याबहन विनोदभाई ९८%, मारुसणा । (७) पटेल समुत्रिाबहन जीवणलाल ९८%, मारुसणा । (८) डाभी हिरेन्द्र नरेशबाई ९९%, डांगरवा । (९) डाभी अजयसिंह दिनेशसिंह ९९%, डांगरवा । (१०) शास्त्री अभिजित रमेशबाई ९९%, डांगरवा । (११) डाभी आदित्य जयदीपभाई ९८%, डांगरवा । (१२) पटेल सिचन दशरथभाई ९९%, डांगरवा । (१३) पटेल बिनल घनश्यामभाई ९९%, डांगरवा । (१४) पटेल किंजल बलदेवभाई ९९%, डांगरवा । (१५) पटेल सौनल जीतेन्द्रभाई ९७%, डांगरवा । (१६) का. अक्षय चंद्रकान्तभाई ९७%, लुणावाडा (१७) का. भूमिका राजेशभाई ९५%, लुणावाला । (१८) पटेल निलेश मनुभाई ९७%, आनंदपुरा । (१९) पटेल ज्योत्सनाबहन राजूभाई ९६%, आनंदपुरा । (२) पटेल सूर्याबहन हितेषभाई ९६%, आनंदपुरा । (२१) पटेल डिम्पल हितेशभाई ९५%, आनंदपुरा । (२२) पटेल राजल पशाभाई ९५%, आनंदपुरा । (२३) पटेल अल्बाहन लालभाई ९५%, आनंदपुरा । (२४) दवे सीमाबहन भरतभाई ९५%, डांगरवा । (२५) पटेल दिव्यानी रमेशभाई ९५%, डांगरवा ।

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर कथा-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्रीहरिकृष्णभाई कांजीभाई गांधी परिवार द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २२-१२ से ता. २८-१२ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण का आयौजन किया गया था । जिस कथा के वक्ता स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (मूली) थे । इस प्रसंग पर ता. २८-१२ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । सभी को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये थे । इसके साथ ही शाकोत्सव का कार्यक्रम किया गया था । बहनो को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । अमदावाद-मूली- सुरेन्द्रनगर-चराडवा, ध्रांगध्रा, हलवद इत्यादि मंदिरों से संत पधारे थे । सभा संचालन स्वामी प्रेमवल्लभदासजीने किया था । को.स्वा. कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सेवाकी थी । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा का १२८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से चराडवा मंदिर का १२८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर ता. ९-३-१३ से ता. १३-३-१३ तक पंचदिनात्मक श्रीमद् सतंगिजीवन कथा का आयोजन किया गया था । जिसका कथा के वक्ता शा.स्वा. सूर्यप्रकाश दासजी थे । संहितापाठ में श्रीजी स्वरुपदासजी (हलवद) विराजमान थे । ता. ९-३-१३ से ११-३-१३ तक त्रिदिनात्मक हरियाग का भी आयोजन किया गया था । जिस में बहुतायत में भक्तों ने यजमान बनने का लाभ लिया था । सोमवती अमावास्या के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । जिनका बड़ी भव्य ता के साथ स्वागत किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री सर्व प्रथम ठाकुरजीकी आरती उतारकर यज्ञशाला में पधारकर ध्वजपूजन किये थे - इस के बाद सभा में विराजमान हुये थे । सभी गाँव वासियों की श्रद्धा देखकर आनन्दित होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

फाल्गुन शुक्ल-२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के संतोने ठाकुरजी का षोडशपोचार से महाभिषेक किया था । बाद में ठाकुरजी की अन्नकूट लगाकर आरती की गयी थी । बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गीवालाजी पधारी थी । पंच दिनात्मक महोत्सव में श्री घनश्याम जन्मोत्सव, गादी पट्टाभिषेक, रात्रि कार्यक्रम भी किया गाय था । इस कार्यक्रम में अमवादावाद, मूली तथा अन्य धामों से भी संत पधारे हुए थे । अनेक गाँवो से सां.यो. बहने भी पधारी थी । चराडवा गाँव के अगल-बगल के हरिर्क्त दर्शन तथा कथा का श्रवण करके धन्यता का अनुभव किये थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । (शा. सत्यप्रकाशासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव ध्रांगध्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पी.पी. स्वामी तथा पू. आत्मप्रकाशदासजी (महंतश्री) एवं शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का १० वाँ पाटोत्सव २८-८-१३ को किया गया था । जिस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर पाटोत्सव विधिअपने हाथों से सम्पन्न किये थे ।

इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचदिनात्मक कथा भी रखी गयी थी । जिस के वक्ता भक्तिनन्दनदासजी (जेतलपुरधाम) तथा को. वन्दनप्रकाशदासजी थे । अपनी सुमधुर वाणी में सभी को रसामृत पान कराये थे । इस अवसर पर प.पू. गादीवालाजी पधारकर बहनों को दर्शन-आशीर्वाद का लाभ दी थी ।

ता. २८-२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से बालस्वरुप घनश्याम महाराज का महाभिषेक किया गया था । बहनो के मंदिर में तथा तपोवन मंदिर में ठाकुरजी की आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने उतारी थी ।

सभा में यजमान घनश्यामभाई, ओधवजीभाई, सोनी शशीकान्तभाई, डॉ. अतुलभाई तथा जयेशभाई सोनीने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । अनेकों धाम से संत पधारक अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे ।

शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (मूली)ने प्रेरणात्मक सेवा की थी । अन्त में समस्त सभाको प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

(महंत स्वामी लींबडी)

सुखदर तथा नारीयाणा गाँव में सत्संग सभा

गत मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से हलवद तालुका के सुखदर गाँव में ध्रांगध्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर से भक्ति स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर कथा प्रवचन करके भगवान का गुणानुवाद किया था ।

नारीयाणा गाँव में ता. ११-३-१३ को भक्ति स्वामी का मंडल कथा करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । संतो ने श्री नरनारायणदेव की गादी का वफादार रहने की सभी से अपील की थी ।(प्रति अनिलभाई दुधरेरिया, ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

वोशिंग्टन डी.सी. श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वाशिंग्टन के मंदिर में फरवरी २, ९, १, ६, २३ ता. को तथा २ मार्च, १० मार्च को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में महामंत्र धुन, वचनामृत पठन, जनमंगल पाठ, आरती तथा अन्य नित्य दैनिक कार्यक्रम हुए थे । १६ फरवरी वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री का पूजन-पठन किया गया था । महा शिवरात्री के दिन भगवान शिव का पूजन अर्चन किया गया था । इस पूजन में १५० जितने भक्त भाग लेकर धन्यताका अनुभव किये थे । (कनुभाई पटेल)

पियोरिया (आई.एस.एस.ओ. चेप्टर-अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से हरिभक्तों द्वारा प्रति रविवार को सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । ३ मार्च रविवार को हरिभक्त एक साथ मिलकर सुन्दर शाकोत्सव किये थे । बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को भगवान का कार्य समझकर प्रतिष्ठित किये थे । १० मार्च को शिव रात्रि के दिन उत्सव करके भगवान भोलेनाथ का पूजन अर्चन विधिवत किये थे । बालक भी युवकों के साथ गीत गाकर भगवान को रिझाने का काम किये थे । (रमेशभाई पटेल)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

जेतपुर (ता. मोरबी) वर्तमान राजकोट : भारतीबहन भूधरभाई जकासणीया (उम्र. ५४ वर्ष) ता. २२-२-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

टींबा (मूलीदेश) : प.भ. रामसंगभाई ओधडबाई गोहेल (श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुजारी) ता. १२-३-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अमदावाद : प.भ. चंदुभाई चुनीलाल चोकसी (पादरावाला) ता. १४-३-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

कांकरिया मंदिर का पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोजन महोत्सव।

कांकरिया मंदिर का पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोजन महोत्सव ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी (मूली) के पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री (२) लींमडी मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. महाराजश्री (३) भावपुरा मंदिर के पंचम पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजीकी आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री (४) लूणावाडा (छपैयाधाम मंदिर) में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन (५) विराटनगर (ओढव-अमदावाद) मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री (६) माणेकपुर (चौधरी) मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुये हरिभक्त। (७) ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका मंदिर में महापूजा दर्शन।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) के पांचवें पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक अन्नकूट आरती तथा प्रासंगिक सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा डॉ. कांतिभाई पटेल प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करते हुए।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में फूलदोलोत्सव का दर्शन (२) टोरेन्टो (केनेडा) मंदिर में फूलदोलोत्सव (३) कलिवलेन्ड मंदिर मे फूलदोलोत्सव का दर्शन (४) टोरडा मंदिर के षष्टिपूर्ति महोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का दर्शन।

Jagadish Offset
Praful Kharsani